"श्री त्र्यंबकेश्वर प्रसन्न"

श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर मूलगोदावरीके अधिकृत उपाध्याय

भ्रमणदुरध्वनी = 09422268596 भूषण सांभ शिखरे(*ज्योतिष पंडित*)

निनाद भूषण शिखरे

ग्रहसंकेत ज्योतिष कार्यालय(*कृष्णमूर्ती सिध्दांतोपर आधारित*)संतान और विवाह के विशेषतज्ञ

पता = 417,"ग्रहसंकेत" सत्यनारायण मंदिर के पास, मेनरोड,मु.पो.तहसील,श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर.जि.नाशिक 422212 महाराष्ट्र

(02594)233014 फोनका समय = दोपहर 2 से 5 और रात्री 8 से 10 तकही, मिलनेका समय सिर्फ 2 से 5 तकही

---

www.kalsarpyog.com & Email = bhushanshikhare@gmail.com & shikharebs@rediffmail.com

---

गुगलके अँण्ड्राईड प्ले पर यह दो (kalsarpyog & pitrudosh) नामसे हम आपके सेवा मे हाजीर है ।

"।। नारायणबलीपुजा।। "

मृत्यु के पश्चात आत्माका अस्तित्व माना जाता है।हिंदु धर्म मे जन्मके ८४ लाख प्रकार माने जाते है।जैसे की,धर्म, अर्थ, काम,मोक्ष आदी, जन्म और मृत्यु। जन्म के बाद मृत्यु,मृत्यु के बाद जन्म यह संकल्प हिंदु धर्ममे माना नही गया नही है। मृत्यु के बाद जनम यह कामना न मानते मोक्ष का महत्व माना गया है।

जिस तरह मानव शरिर मे अन्नमय और प्राणमय कोश खाली हो जाने के पश्चात मन,बुध्दि,अहंकार, चित, इसीमे से निकलता है। बादमे नव-गर्भ मे प्रवेश करता है।इसी कारण जन्म और मृत्यु के चक्करमे मानव जीव की उत्क्रांती होती है। उसीसे वह बहोत समझदार बनता है। आखरी मे वह मोक्षपद को पहुच जाता है।

इसीमे सभी कोश से वह देहभी निकल जाता है,वह रूप मोक्षरूप होता है।मृत्यु के समय किसी व्यक्ति के शुभ तथा अशुभ वासना अतितीव्र हो तो तब वह वासना मृत जीवात्मा को शांत नही बैठने देती। उसीके मृत्यु के बाद उसीके सफर को गती प्राप्त होती है और दिशा मिलती है। हमेशा की तरह पहले प्राण-कोश फिर वासना-कोश और बादमे मन-कोश निकल पडता है। वासना और विचार संक्षिप्त देह मे रखे जाते है। उसके बाद आत्मा आगे की राह देखते रूकता है।

लेकीन इस क्रियाको कई साल लग जाते है। जीवात्मा के मृत्यु समय वासना तीव्र होने के कारण पिश्चाच्च योनी मे प्रवेश करते है। जब वह भूत योनी या पिश्याच्च योनी के समय भी मृत्यु के बाद वासनामय जीवात्मा भूतयोनी मे प्रवेश न करते हुए पितृयोनी में ही रूकता हे। वहॉ से वह अपने पूर्वजोंके वंशपर ध्यान रखते है तथा उनके उत्कर्ष के लिए खुदके वासना का भोग करता है। जीवात्मा का पितृलोक मे रूकना कुछ सालोके लिए ही रहता है। बाद मे फिर अपनी सफर के लिए लगता है।

हिंदु धर्ममे ६६ दुर्मरण के प्रकार कहे गये है। मृत्यु का कारण आत्महत्या,खुन,अपघात या अकाल मृत्यु हो जानेसे आत्मा पिश्याच्च योनीमें प्रवेश करता है। इसी कारण उस व्यक्तिका आत्मा वासना क्षय होने तक पिश्याच्च योनी मेंही रहाता है और बादमे परलोक की यात्रा करता है। इसी कारण यह नारायणबली का पुजा विधी अतृप्त आत्मावोंके मोक्ष के लिए किया जाता है। अपने कुलमें कोई व्यक्ति(पुरुष या महिला) अतृप्त होते है। तो उनको सद्गती या मुक्ति के लिए ये पितृदोष का (नारायणबली-नागबली एवं त्रिपिंडी श्राध्द)विधी किया जाता है। नारायणबली-नागबली एवं त्रिपिंडी श्राध्द की विशेषत: यहॉ स्पष्ट की गयी है जैसे की,शारिरीक स्थिती ठीक-ठाक होते हुए भी हमारे वंश की वृध्दि मे रूकावटे या बाधा आना और बिना वजह शारिरीक व्यथित करते है। हमारे मनकी इच्छाए अधुरी रहना या बारबार रूकावटे आना। इन जैसे अतृप्त आत्माओं की मुक्ती के लिए पितृदोष का (नारायणबली-नागबली एवं त्रिपिंडी श्राध्द)विधी की विषेशता बनाई गई है।

नारायणबली कर्मके व्दारा ज्यादातर अतृप्त आत्मा को मोक्ष मिलता है। नारायणबली कर्म में काश्यप गोत्र

पृष्ठ (१) क्रमश: आगे पढिए

और नारायण नाम अतृप्त आत्मा को देकर पुरा कर्म किया जाता है। इस कर्ममे यजमान का गोत्र या किसी भी प्रत्यक्ष व्यक्तिके नाम का उच्चारण नही किया जाता। कोई भी व्यक्ति यह सौ प्रतिशत नही कह सकता की मेरे घर मे कोई भी अतृप्त आत्मा नही हो सकता। इसी अपने अतृप्त पूर्वजोंके उध्दार करके उनके प्रती अपना आभार मानने यह एक जरीया है और घर मे सभी प्रकार की सुख-समृध्दी का फल मिलता है। बच्चोंके शुभकार्य संपन्न होते है तथा सुसंतान की भी प्राप्ती होती है। सभी प्रकार के शारिरीक,आर्थिक,मानसिक लाभ होते है। इस हर प्रती व्यक्ति यह पितृदोष का (नारायणबली-नागबली एवं त्रिपिंडी श्राध्द)विधी कर सकता है,इसमे कोई शक नही।

।। " नागबलीपुजा " ।।

एतैत सर्पा: शिकंठ्भूषा लोकोपकाराय भुवं वहन्त:। भूतै समेता मणिभूषितांगा: गृण्हित पुजा परमा नमोव:।। कल्याणरूपं फणिराजमग्र्यं नानाफणा मंडलराजमानम:। भक्त्यैकगम्यं जनताशरण्यं यजाम्यहंन: स्वकुला भिवृध्यै।।

सर्पदोष निवारण के लिए किया जानेवाला विधी नागबली है। सर्पदोष कई कारणोंसे पहचाना जा सकता है। उसमेसे कुछ उदाहरण जैसे की,औलाद न होना या बच्चे बारबार बिमार रहना। उदररोग,कुष्ठ,कंडु,मुत्रपुच्छ जैसे रोगोंको सर्पबाधा माना जाता। ८४ लक्ष योनी में नाग ये एक सर्प माना जाता है। सर्प योनी और मानव का निकट का संबंध है। महाभारत मे यह संबंध स्पष्ट दिखाई देता है। ब्रम्हदेव से सप्तऋषी का निर्माण होना। उनमेसें एक मरीची ऋषी पुत्र काश्यप ऋषी की दो पत्नीयॉं थी। उनमें से एक का नाम कद्रु और दुसरी का नाम विनिता थे। कद्रु को हुए सर्प और विनिता को हुए गरूड। इस तरह से मानव और सर्प का संबंध बना हुए है इस लिए दोंनों की उत्पत्तीमें साम्य है।

पतांजली योगशास्त्र के अनुसार मनुष्य को शरिरमें रहनेवाले कुंडलिनी की जागृतीसें देह की सहायता सफल होती है। इस बारेंमे महाराष्ट्र के अध्यात्मिक गुरू श्री संत शिरोमणी ज्ञानेश्वर माऊलीजी के स्वहस्त रचित सार्थ ज्ञानेश्वरी ग्रंथमे बहुतही खुबीसें पेश किया गया है। मूलाधार चक्रमें पीठमें आरंभी में कुंडलिनी रहती है। कुंडलिनी के नीचे उत्थान के कारण मनुष्य को ब्रम्हज्ञानकी प्राप्ती होती है। मनुष्यको पुरूषत्व इसी कुंडलिनी व्दारा प्राप्त होता है। धर्मशास्त्रमें इसी कुंडलिनीकों सर्प की संज्ञा दी गई है।

।। ''धनलोभात मृतायेच सर्पयोनी व्यवस्थिता "।।

सर्प की हत्या करनेसें सर्पदोष निर्माण होता है। कुछ लोंगोंके पुराने घरोंमें पहले धन रखा जाता था,उस धन रक्षा नाग करता है,ऐसी कहानीयॉं हम हमारे पूर्वजोंसे सुनते आ रहें है और जादातर कुछ कहानीओंमें सच्चाईयां भी होती है। कोई माने या ना माने दुनियामे कुछ सच्चाई हवा(वायु) की तरह होती है जिसको कोई माई का लाल ठुकराया दे नही सकता। धनपर बैठा हुआ वो नाग पिछली जनममे (उसकी धनपर होनेवाली आसक्ति के कारण) उस धन का मालिक होता है,ऐसी मान्यता या लोकधारणा होती है।

अनंतं वासुकिं शेषं पद्मनाभंच कंबलम्। शंखपाल धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।।
एतानी नव नामानी नागानांच महात्मना। सायंकाले पठेन्नित्यम् प्रात:काले विशेषत:।।
तस्मै विषभयं नास्ती सर्वत्र विजयी भवेत।।

उपर दिए हुए श्लोक से यह जानकारी मिलती है की,यश या विजय देनेवाली नाग देवता है। उसकी हत्या से सर्पदोष लगता है और इसी सर्पदोष की मुक्ति के लिए नागबली विधी करने श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर की कई पिढीओंसे परंपरा बनी है। हर साल कई लाख लोग यहॉपर आते है।

।। " त्रिपिंडी श्राध्द पुजा "।।

कलहोत्र नित्यम् हिमविनत्व दरिद्रता । दैन्यविपर्यय: श्रृति: सापिडा प्रेत संभव:।।१।।
राजचोराग्निद्दष्टैश्चहियते यध्दनंतरे । पापकर्मतंचित सापिडा प्रेत संभव:।।२।।
परस्त्रीषु परस्वेषु परद्रोहेषु येरता: । परवृत्तिंहिछेद्यती सापिडा प्रेत संभव:।।३।।
पुत्रद्वेष:,पितृद्वेष: तथा द्वेषस्तु बंधुषु । नानाजातिषु येद्वेष: सापिडा प्रेत संभव:।।४।।

पृष्ठ (२) क्रमश: आगे पढिए

एवम् नानाविधापीडाः प्रेताः कुर्वतिजंतंषु तेषां पीडा विनाशार्थे त्रिपिंडी श्राध्दमाचरेत्।।५।।

अर्थात नित्यकलह,मलिनित्यम्,दरिद्रता,दैन्यम्,बोलनेका गलत मतलब निकालना,राजभय, चोरभय, अग्निभय, दृष्टभय,पापकर्मरति,परस्त्रीरति,परधनरति,परवृत्तिहरण,परद्रोहरति,पुत्रद्वेष,पितृद्वेष,बंधुद्वेष,नानाजातीद्वेष ईसी नानाविविध दोषोंके परिहारार्थ त्रिपिंडी श्राध्द किया जाता है।

त्रिपिंडी श्राध्द को काम्य श्राध्द कहते है। हमारी विशेष मनोकामना पुरी होने के लिए भी करवाते है। कई सालोंतक पितरोंका विधी पूर्वक श्राध्द न होनेसें अपने पितरोंको प्रेतत्व मिलता है। श्राध्द कमलाकर इस ग्रंथमे हर सालमें ७२ बार अपने पूर्वजोंका श्राध्द करवाना चाहिए यह कहॉं गया है।

अमावास्या व्दादशैव क्षयाहव्दितये। षोडषापरपक्षस्य अष्टकान्वष्टाकाश्चषट।।
संक्रांन्त्यो व्दादश तथा अयने व्देच कीर्तिते। चतुर्दशच मन्वादेर्युगादेश्च चतुष्टयम।।
न सन्ति पितरश्चेति कृत्वा मनसी यो नरः। श्राध्दं न कुरूते तत्र तस्य रक्तं पिबंती ते।।(*आदित्य पुराण*)

श्राध्द ना करने से होनेवाला दोष त्रिपिंडी श्राध्दसे दुर या समाप्त हो जाता है। जैसे की भूतबाधा, प्रेतबाधा, गंधर्व राक्षस शाकिनी आदि दोष दुर करने के लिए ही त्रिपिंडी श्राध्द करने का प्रावधान हमारे हिंदु धर्मशास्त्रमे है। घरमे कलह,अशांती,बिमारीयॉं,अपयश,अकाली मृत्यु,किसीकी वासना पूर्ती ना होना,शादीयोंमें बारंबार अडचणे उत्पन्न होना और संतानमें बारंबार अडचणे उत्पन्न होना। इस सभी परेशानीओंको प्रेतदोष कहॉं जाता है। धर्मग्रंथमे और धर्मशास्त्रके अनुसार इस जैसे सभी दोषोंके लिए त्रिपिंडी श्राध्द करने को सुचित किया गया है।

त्रिपिंडी श्राध्दमें ब्रम्हाजी, विष्णुजी, रूद्र(शिवजी) इन तीन देवताओंका आवाहनपूर्वक प्राणप्रतिष्ठापूर्वक पुजा की जाती है। त्रिपिंडी श्राध्दमें सात्विक प्रेतदोष निवारण के लिए ब्रम्हाजी का पुजन करके भात का (पका चावल) पिंड दिया जाता है। राजस प्रेतदोष निवारण के लिए विष्णुजी का पुजन करके जवका पिंड दिया जाता है। तामस प्रेतदोष निवारण के लिए रूद्र(शिवजी)जी का पुजन करके काले तीलका पिंड दिया जाता है।

त्रिपिंडी श्राध्द यह पुजा सभी अतृप्त आत्माओंकें मोक्ष प्राप्ती के लिए कि जाती है। त्रिपिंडी श्राध्दमें अपने किसीभी पूर्वजोंका गोत्र और नाम नही लिया जाता। कारण अपने कौनसे पितरोंकों मुक्ति नही मिला या बाधित है इस के बारेमें शाश्वत ज्ञान नही होता। सभी अतृप्त आत्माओंकें मोक्ष प्राप्ती के लिए त्रिपिंडी श्राध्द करवाने का धर्मग्रंथमें और धर्मशास्त्रमें बताया गया है।

"।।पितृदोष(नारायणबली-नागबली और त्रिपिंडी श्राध्द)विधी मे किए जानेवाले क्रम का क्रम"।।

पहले दिन अपने पापमुक्ति के लिए तिर्थराज कुशावर्त कुंडपर जाकर गंगापुजन करके जीनके पिता स्वर्गवासी हुए है वह व्यक्ति(**सिर्फ पुरूष**)वपन या क्षौर करके शरीर शुध्दि हेतु प्रायश्चित्त संकल्प करके स्वच्छ स्नान करके पितृशाप से मुक्ति के नारायणबली का प्रधान संकल्प,न्यास,कलशस्थापना,सूर्य दिप भूमी वरूण पुजन करके विष्णुपुजन तथा विष्णुतर्पण,ब्रम्हा,विष्णु,रद्र,यम,तत्पुरुष(प्रेत) इन पंचदेवता का स्थापना एवं पुजन करके,स्थापीत देवता हवन,एकादश विष्णुश्राध्द,पंचदेवता श्राध्द,बलीप्रदान,पालाशविधी और दशांत कर्म करके पहले दिन के नारायणबली की समाप्ती। दुसरे दिन के नारायणबली की शुरूवात महिकोदिष्ट श्राध्द,मासिक निवृत्ति श्राध्द,सपिंडी श्राध्द, यहॉंपर नारायणबली विधी की समाप्ती। तुरंत अगला विधी नागबली शुरू होगा। नागबली विधीमें प्रधान संकल्प, प्राणप्रतिष्ठा करके बलीप्रदान करके,नागदहन,सर्पबली पिंडप्रदान करके दुसरे दिनकी समाप्ती। तिसरे या आखरी दिनपर तिर्थराज कुशावर्त कुंडपर जाकर अंदाजन दो घंटेका त्रिपिंडी श्राध्द विधी करके गुरूजीकें घरपर पधारके रोजके ही सर्वसाधारण घरके कपडे पहनकर पितृदोषका निवारण हेतु और शुभफल प्राप्ती हेतु गणेशपुजन,स्वस्तिपुण्याहवाचन,पंडिताई की व्दारा आरती पुजन करके,सुवर्ण नाग का पुजन करके इसी तरहसे पुरे तीन की पितृदोष (**नारायणबली-नागबली और त्रिपिंडी श्राध्द**)की पुजाकी समाप्ती हो जाती है।

पृष्ठ (३) क्रमशः आगे पढिए

ज्योतिष शास्त्रके बृहत्पाराशरी इस नामके प्राचिन ग्रंथमे अनापत्यायोग के बारेकी परिस्थिती कैसे हो तो पितृदोष,सर्पदोष,पिशाश्च्च दोष इनसे होनेवाली पीडा के संभावीत दोषोका अतिसुक्ष्मतासे विचार किया है। इस वजह से हर दोषोके कुछ उदाहरण सार्थ श्लोको के हिंदीमे अर्थके साथ देकर और उसके परिहारार्थ पितृदोष का (नारायणबली-नागबली और त्रिपिंडी श्राध्द) विधी करवाना चाहिए।

"सर्पशाप (सर्पदोष)"

पुत्रस्थाने कुजक्षेत्रे पुत्रे राहूसमन्विते। सौम्यदृष्टे युते वापी सर्पशापसुतक्षय:।।

(बृहत्पाराशरी श्लोक ११३)

कुंडलीमे पंचम स्थान यह सूत स्थान(संतान स्थान) है। मेष या वृश्चिक इनमे से एक राशीमें पंचम स्थान मे होकर राहुसे युक्त होकर वह राहु बुध के साथ या दृष्यीसे दृष्ट हो तो यकीननही सर्पशाप है,ऐसा जरूर समझना चाहिए।

पुत्रस्था भानुमंदरा: स्वर्भानु: राशीजोऽगिरा। निर्मलौ पुत्रलग्नेशौ सर्पशापसुतक्षय:।।

(बृहत्पाराशरी श्लोक ११४)

पंचमस्थानमे सूर्य,मंगल,बुध,गुरू,शनी और राहू इनमे से ग्रह हो तो और पंचमेश तथा लग्नेश यह निर्बली हो तो सर्पशापसे सुतक्षय(संतान का क्षय) जरूर होता है।

लग्नेशे राहूसंयुक्ते पुत्रेशे भौमसंयुते। कारके राहूसंदृष्टे सर्पशापसुतक्षय:।।

(बृहत्पाराशरी श्लोक १५)

लग्नस्थान का स्वामी राहूसे युक्त हो तो या पंचमस्थानका स्वामी मंगलसे युक्त हो तो अगर पंचमस्थानका कारक ग्रह राहूके दृष्टीमे है तो यकीननही सर्पशाप है,ऐसा जरूर समझना चाहिए।

" ब्रम्हशाप "

ब्राम्हणो के शापसे वंश का नाश होता ही है।

गुरुक्षेत्रे यथा राहू: पुत्रे जीवानभानुजा:। धर्मस्थानाधिपे नाशे ब्रम्हशापात् सुतक्षय:।।

धनु या मीन इनमे से एक राशीमे राह होकर संतान स्थानमे गुरू,मंगल या शनी इनमे से ग्रह बैठा है और साथमे नवमस्थान का स्वामी(अधिपती) अष्टम स्थानमे मतलब मृत्यु स्थानमे हो तो ब्राम्हण का शाप है ऐसा समजना।

" प्रेत शाप(पिशाच्चदिक शाप)"

कर्मलोपं पितृभ्यशच तच्छापात् वंसनाशनम्। पुत्रस्थितौ मंदसूर्यौ क्षीणचंद्रस्तु सप्तमे।।
लग्ने व्यये राहू जीवौ प्रेत शापात् सुतक्षय:।। (बृहत्पाराशरी श्लोक ९६)

पितृकर्म या प्रेतकर्म का कर्म न होनेके कारण वंसका नाश होता है। पंचमस्थानमे शनी तथा सूर्य और सप्तम स्थानमे क्षीण चंद्रमा है और उसीके साथ प्रथम स्थानमे राहू हो तो या व्ययमे (बारवे स्थान)गुरू होगा तो प्रेतशाप से संतानका नाश की संभावना होती है।

" पितृशाप "

पितृस्थानाधिपौ भौम: पुत्रेशेन समन्वित:। लग्ने पुत्रे पितृस्थाने पापात् संततिविनाशनम्।।

(बृहत्पाराशरी श्लोक २४)

पितृस्थान का(दशमस्थान)स्वामी मंगल यह पंचमस्थान का अधिपतीसे युक्त होकर प्रथम, पंचम, दशम स्थानमे हो तो पितृशापसे संतान का नाश होता ही है।

लग्नादष्टमगौ भानौ पुत्रस्थे भानुनंदने। पुत्रेशे राहूसंयुक्ते लग्ने पापे सुतक्षय:।।

(बृहत्पाराशरी श्लोक २७)

लग्नसे अष्टम स्थानमे सूर्य और उसी तरह लग्नसे पंचमस्थानमे शनी होता है तथा पंचमेश राहूके साथ

पृष्ठ (४) क्रमश: आगे पढिए

लग्नमे युक्त हो तो वंशविच्छेद यकीनन होता है।

"अनापत्यत्व योग "

पुत्रवित्तकलत्रशा संयुक्ता नवभागपा। पापांशका पापयुता अनपत्यत्वमादिशेत्।।

(बृहत्पाराशरी श्लोक १२४)

पंचंम(**सुत**),धन(**वित्त**),सप्तम(**कलत्र**) इन सभींके स्वामी नवमांशमे एक-साथ होकर पापग्रहोंके अंशमे हो तो या पापग्रहोंसे युक्त है तो अनापत्यत्व योग है ऐसे मान लेवे।

साधारण ज्योतिष शास्त्रका ऐसा भी नियम है की,दशमस्थान का अथवा पंचमस्थान का यह निर्बली है, तथा राहू,मंगल ऐसे पापग्रहसें युक्त होगा तो क्रमसे पितृशाप, प्रेतशाप तथा सर्पशाप होताही है।

"कृष्णमूर्ती सिध्दांतोके अनुमानसे कुंडलीमे पितृदोष"

कृष्णमूर्ती ज्योतिषके सिध्दांतोके अनुमानसे कौनसी कुंडली सहीमे पितृदोष के कारण बाधित है, यह जानना महत्वपूर्ण है। इस लिए जनमकुंडलीमे देखना जरूरी है।

१) प्रश्न पुछने के समयपर जनमकुंडलीमे राहू या केतू की महादशा होनी जरूरी है।
२) कुंडलीमे जीस ग्रहोंकी महादशा सुरू है वो ग्रह राहू या केतू के नक्षत्रमे होना जरूरी है।
३) प्रश्न पुछने के समयपर जनमकुंडलीमे कुंडलीमे जीस ग्रहोंकी महादशा सुरू है वो ग्रह राहू या केतू के आंशीक तरीकेसे समीम या युतीमे होना अनिवार्य है।
४) जनम कुंडलीमे चंद्र/राहु या चंद्र/केतु की युती होनी जरूरी है। अन्यथा लग्नेश/राहु या लग्नेश/केतु इनकी युतीमे होना अनिवार्य है।

उपरी प्रकारकी होनेवाली ग्रहस्थिती जीस समयपर अपने सामने आएगी उस वक्त निचे दिए हुए ग्रहोंकी स्थितीभी प्रश्नकुंडलीमें होना जरूरी है।

१) प्रश्न पुछनेके समयपर राहू या केतू का नक्षत्र होना चाहिए।
२) प्रश्न पुछनेके समयपर चंद्र जीस नक्षत्र स्थित होगा वह नक्षत्रस्वामी राहू या केतू का नक्षत्रमे होना चाहिए।
३) प्रश्न पुछनेके समयपर चंद्र/राहु या चंद्र/केतु की अन्यथा सूर्य/राहु या सूर्य/केतु युती होनी जरूरी है। अन्यथा लग्नेश राहु या केतु होना।

ज्योतिष प्रमाणके सर्वसाधारण ऐसा कह सकते हो की,लग्नेश या पंचमेश इनके स्वामी **6 / 8 / 12** इन त्रिकस्थानमे होकर या पापग्रहोंसे युक्त हो तो उस स्थानोंके शुभ-फल मिलते नही।

पूजां रुद्रस्य कुर्वीत तद्गणांनाच नित्यश:।।

ऐसा कहा गया है की,श्री.शिवजीके पैशाचादिक गणोकें साथ शिवजी का पुजन करवाने का प्रावधान हमारे धर्मशास्त्रोंमे कहॉं गया है। नारायणबली-नागबली और त्रिपिंडी श्राध्द इन विधीयोंमे भी शिवजीकें एकादश गणोंके सहित पुजन का प्रमुखता: से की जाती है। भगवान धन्वंतरीने भी दवाईयोंके साथही सत्संतान प्राप्ति हेतु मंत्रादि दिव्य देवतांओंके अनुष्ठानोका महत्वको तव्तजो दी गई है।

देवता ब्राम्हणपरा: शौचाचारहिते रता:। महागणान् प्रसूयन्ते विपरीतास्तु निर्गुणान्।।

अर्थात आयुर्वेद तथा ज्योतिषशास्त्र इन सभींकी वेदप्रणित पितृदोषके प्रती (**नारायणबली-नागबली और त्रिपिंडी श्राध्द**) अनुष्ठानोकेंसंबंधी पूर्ण एकवाक्यता है यह वाचकों को जरूर ध्यानमें आएगा।

****

पृष्ठ (५) क्रमश: आगे पढिए

"पितृदोष की विधी श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर नाशिक मे ही क्यो किया जाता है इस का सारांश मे जानकारी"

भारत मे सिर्फ दो ही ऐसे स्थान है जिन्हे महास्मशान कहा जाता है,पहेला है श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर नाशिक मे और दुसरा है श्री क्षेत्र काशी। क्योकि दोनों जगहोंपर गंगा ही है,उत्तर भारत मे जो गंगा है उसका नाम है भागिरिथी गंगा और श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर मे जो गंगा है उसका नाम है गौतमी गंगा (*वह गंगा वर्तमान मे गोदावरी इस नाम से परिचित है*।)दोनोंभी नदियोंका जन्म का मूल संबंध श्री.मृत्युंजय शिवजी के साथ ही है। इन दो जगह शास्त्रिय व धार्मिक नियम लगभग एकही है या समानही है,बस दोनोंमे इतना ही फरक है की, श्री क्षेत्र काशीमे प्रत्यक्ष और्धदेहिक कर्मका महत्व है और श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर अप्रत्यक्ष और्धदेहिक कर्मका महत्व है। और्धदेहिक कर्मका मतलब है अंत्येष्ठि या अंतिमसंस्कार। प्रत्यक्ष और्धदेहिक कर्मका मतलब है श्री क्षेत्र काशी मे गंगाजी दो घाटोपर बारोमास चौविस घंटा मृत व्यक्तियोंका विधी होता है और श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर मे अप्रत्यक्ष और्धदेहिक कर्मका मतलब है कुछ अपने ही परिवारके ऐसे भी लोग हो सकते है, जिनकी मृत्यु हुई है मगर उनका मृतशरिर या अस्थियॉ (*हड्डीया*)भी कभी प्राप्त ना हुआ हो या उनका कुछ भी न मिला। ऐसे मृत लोगोंका अंत्येष्ठि या अंतिमसंस्कार जब-तक नही होता तब-तक उन्हे मुक्ति नही मिलती या प्राप्त नही होती ऐसे ही मुक्तिपाने की चाहत की राह मे खडे ऐसे लोगोंका कर्म श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर मे किया जाता है। नैर्सर्गिक नियम के अनुसार ऐसे अज्ञानी लोग जो अपनेही कोई पूर्वज है जिन्हे हमारेसे मुक्ति पानेवाले चाहतमे खडे हो वह लोग पिता,माता या पत्नि के परिवार के हो जो अंजान है मतलब वो स्त्री हो या पुरूष हो ऐसेही मुक्ति पाने लोगोंका कर्म श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर मे किया जाता है। नियम है की हिंदु धर्म के अनुसार जैसे की, हमे भगवान का आर्शिवाद हमारे लिए जरूरी है वैसे हमारे पूर्वजोंका आर्शिवाद भी हमारे लिए भी उतनाही जरूरी है। हमारा यह रोजका अनुभव है की, ज्यादातर लोग जीस ढंगसे श्राध्द विधी करवाना चाहिए उस ढंगसे श्राध्द विधी आज लोग करवातेही नही अगर ऐसा लगातार तीन सालसे ज्यादा सालोसे होता रहॉ हो तो अपने पूर्वजोंको फिरसे प्रेतपीडा प्राप्त होती है ऐसे प्रेतपीडा प्राप्त हुई लोगोंके लिए श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर मे विधी किये जाते है।

(1) हिंदु धर्ममे पहिली सती हुई उस सतीका नाम है अहिल्या जो गौतम ऋषी की धर्मपत्नी थी, रामायण मे लिखित है की,श्री रामजी पदस्पर्शसे जीनको मुक्ति मिली बाद जीनका उध्दार हुआ वही यह सती अहिल्या यही पर थी। मुक्ति उपरांत वह नदी बनकर गोदावरी नदीमे संमिलीत हो गई वह स्थान भी यहीपर है।

(2) दक्षिण भारत का एकमेक सिंहस्थ कुंभमेले का आयोजन हर बाराह सालो के बार मे होता है वह स्थान यहीपर ही है।

(3) श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर मे सह्याद्रि पहाडी श्रृंखला का आखरी छोर मतलब ब्रम्हगिरी पर्बत भी यहीपर स्थित है, इसी पर्बतपरसेही गोदावरी का जन्म हुआ है। जिसे ब्रम्हा,विष्णु,रूद्र का रुप भी माना गयॉ है।

(4) जिस वक्त श्री रामजी चौदाह साल के बनवास के वक्त पंचवटी नाशिक मे थे उसी वक्त दुख के मारे तडफ-तडफकर उनके पिताश्री दशरथजी मृत्यु हुई ऐसा समाचार मिलने पर रामजी दुखीत हुए थे। एक दिन रात्रीमे उनके सपने जाकर मुझे अभी-तक उत्तम गति नही मिली है, इस लिए मुझे उत्तम गति मिलने हेतु तु यथायोग्य कुछ प्रयत्न कर। पासही मे रहनेवाले ऋषी काश्यपने श्री रामजीको जो उपदेश दिया है वह यह है की,

सिंहस्थेच सुरगुरौ दुर्लभं गौतमी जलम्। यत्रकुत्रापि राजेंद्र कुशावर्त विशेषत:।।
तवभाग्येन निकटे वर्तते ब्रम्हधुर:। सिंहस्थोपि समायात: तत्र गत्वा सुखीभव।।
सिंहस्थेतु समायाते राम: कश्यप संयुत:। त्र्यंबकक्षेत्र मागत्य तीर्थयात्रा चकार ह।।(स्कंदमहापुराण)

अर्थात् वर्तमानमे सिंहस्थ कुंभमेला पर्वकाल शुरू है,तभी हे रामचंद्रजी तुम श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर जाकर तीर्थराज कुशावर्त पर तीर्थश्राध्द विधी कर तो तुम्हारे पिता दशरथजीको उत्तम मोक्ष प्राप्त होगा और तुम्हारी मनोकामनाभी सफल होगी। बाद मे ऋषी काश्यपके ही आचार्यत्वमे रामजीने दशरथजीके नामसे यहॉ-पर आकर श्राध्द करवाया।

।।"श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर (नाशिक) मे आनेसे पहले भाविकोंके लिए आवश्यक विशेष सुचनाए "।।

श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर मे आज ऐसे भी अनाधिकृत या बोगस ठगी करनेवाले पुरोहित (*झुठे ब्राम्हण*) है वह हम यहॉ के सभी विधी करवाते है ऐसा झुठ बोलकर पैसे ऐठ लेते है ऐसा बहोत बार यहॉपर देखा गयॉ है। हर श्रध्दालु भाविक अच्छि तरह ध्यान रखे की, आप जिन के पास पुजा-विधी करवा रहे है उनके पास अधिकृत (*रजिस्टर*) अधिकारपत्र और अधिकृत लोगो है या नही इसकी मांग करे और यह जॉच-पखरकर ही भरोसा करके कौनसा भी विधी करवाए।